वह चिड़िया जो

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत पाठ 'वह चिड़िया जो' के लेखक 'केदारनाथ अग्रवाल' जी हैं। यहाँ एक चिड़िया के बारे में बताया गया है। एक चिड़िया जो छोटी सी है नीले पंखों वाली है। उसे खेतों से ताज़े दूध भरे अनाज के दाने चोंच मारकर खाना बहुत अच्छा लगता है। उसे अनाज बहुत प्रिय है। वह अपने जीवन से बहुत संतुष्ट है। उसे वन-बाबा अर्थात् जंगल के लिए अपने मधुर स्वर में गाना बहुत अच्छा लगता है। वह अपने नीले पंख खोलकर खुले आसमान में उड़ती है। उसे अपने जंगल से बहुत प्यार है। उसे नदी के बहते हुए जल से मोती समान पानी पीना बहुत अच्छा लगता है। वह चिड़िया छोटी ज़रूर है लेकिन आत्म स्वाभिमानी है। उसे जंगल से जुड़ी हर चीज़ प्रिय है।

कविता की विशेषताएँ -

- (1) कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।
- (2) वन-बाबा जंगल को कहा गया है।
- (3) बहते हुए जल को मोती के समान कहा गया है।

कविता का उद्देश्य -

- (1) पेड़-पौधे तथा जंगल की हरीयाली का महत्व बताया गया है।
- (2) प्राकृतिक सौन्दर्य को प्रस्तुत किया गया है।
- (3) प्राकृति के प्रति प्रेम को प्रस्तुत किया गया है।

कविता का संदेश -

कविता में प्राकृतिक महत्व को बताया गया है। जीव जंतु भी हमें जीने का सही तरीका सिखा जाते हैं। प्रकृति से जो मिलता है उससे चिड़िया खुशी-खुशी अपना जीवन यापन करती है। चिड़िया के माध्यम से मनुष्यों को भी नीति परक बातें बताई गई हैं।